भगतसिंह ने कहा

"सभी देशों को आजाद करवाने वाले वहां के विद्यार्थी और नौजवान ही हुआ करते हैं। क्या हिन्दुस्तान के नौजवान अलग-अलग रहकर अपना और देश का अस्तित्व बचा पायेंगे? नौजवान 1919 में विद्यार्थियों पर किये गये अत्याचार भूल नहीं सकते। वे पढ़ें। जरूर पढ़ें। साथ ही पॉलिटिक्स का भी ज्ञान हासिल करें और जब जरूरत हो तो मैदान में कूद पड़ें और अपने जीवन इसी काम में लगा दें। अपने प्राणों का इसी में उत्सर्ग कर दें। वरन् बचने का कोई उपाय नजर नहीं आता।"

–भगतसिंह

('विद्यार्थी और राजनीति', जून, 1928 में 'किरती' पत्रिका में प्रकाशित लेख)

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' *सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, फण्डिंग एजेंसियों, पूंजीवादी घरानों एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। जनता का वैकल्पिक मीडिया सिर्फ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए— हमारी यह दृढ़ मान्यता है।*

अतः हम अपने सभी पाठकों-शुभचिन्तकों-सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम सम्भव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

पाठक मंच

गैर जनवादी शिक्षण व्यवस्था और छात्रों-नौजवानों का संकट

किसी भी समाज के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक संकटों को उस समाज की युवा पीढ़ी की समस्याओं में ढूंढ़ा जा सकता है।

अठारह साल की उम्र में जहां नौजवान की आंखों में नये-नये सपने, जीवन में कल्पनाशीलता, जिज्ञासा और सत्य की जीत में पूर्ण विश्वास होना चाहिए वहीं आज का नौजवान सर्वाधिक चिन्ताग्रस्त है। उसका भविष्य अन्धकारमय है क्योंकि मौजूदा शिक्षा व्यवस्था का रोजगार से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध दिखायी नहीं देता।

किसी शिक्षण व्यवस्था की उपयोगिता और उसकी जनवादिता व्यवहार में उसके अभ्यास पर निर्भर करती है। लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था सामाजिक व्यवहार से पूर्णतः कटी हुई है। विज्ञान का छात्र अपनी पढ़ाई पूरी कर जब औद्योगिक क्षेत्रों में जाता है तो उसकी पिछली पढ़ाई की कोई सार्थकता नहीं होती। उसका ज्ञान सिर्फ प्रतियोगी परीक्षाओं की बाधा पार करने के काम में आती है। इसके साथ ही, विज्ञान युग के नाम पर हमारी शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक विषयों की घोर उपेक्षा दिखायी दे रही है और जो पढ़ाई होती है उसका भी जीवन में कोई अभ्यास नहीं कराया जाता। यदि पढ़ाई जीवन से जुड़ी होती तो नौजवान देश के विकास में अपनी भूमिका को समझ पाता और समाज निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ पाता। मेरी राय में शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि विद्यार्थी जीवन में छात्रों को समाज में लोगों के बीच भेजा जाये।

शासक वर्ग की हमेशा कोशिश रहती है कि कुछ ऐसी बाधाएं तैयार करो जिससे नौजवान अपनी बदतर स्थिति के लिए खुद को ही जिम्मेवार माने और उसकी विप्लवी शक्ति के आक्रोश को शान्त किया जा सके। इसके लिए प्रतियोगिता की बाधा उत्पन्न करने से लेकर विद्यार्थियों को पढ़ने तक के अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। इसी के तहत विश्वविद्यालयों में सीटों की संख्या में कटौती की जा रही है।

आज नौजवानों को शासक वर्ग की साजिशों को समझना होगा। इस व्यवस्था के पास न तो कल ही रोजगार थे और न ही आज क्योंकि बेरोजगारी का सीधा सम्बन्ध पूंजी की उस गति से है जो अधिक हाथों से कम हाथों की ओर बढ़ती है। पूंजी की इसी गति पर सवार होकर शासक वर्ग तथा तमाम पूंजीपति प्रतिष्ठान रंगरेलियां मना रहे हैं।

अपनी समस्याओं से निजात पाने के लिए नौजवानों को अर्थशास्त्र की इस मूलभूत बात को समझना होगा। छात्रों को शासक वर्ग की राजनीति से बाहर पूंजी की गति के रुख को बदलने वाले राजनीतिक अर्थशास्त्र का अध्ययन करना होगा। आज नौजवानों को अपनी शक्ति को जनता की शक्ति के साथ लयबद्ध करना होगा तभी हमारे संकटों-समस्याओं से निजात मिल सकती है।

विजय गोविन्द सिंह

विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कब दूर होगी हमारी असुरक्षा

'आह्वान' के जरिये मैं कुछ बातें कहना चाहती हूं।

आजकल के दौर में हम सभी लड़कियों और महिलाओं की एक ही समस्या है—हमारी आत्मिक एवं शारीरिक सुरक्षा। समाज में हम अपने आपको कहीं भी सुरक्षित नहीं महसूस कर पाते। चाहे घर हो या बाहर। जब हम कहीं जाते हैं तो सबसे पहले हमें यही कहा जाता है कि शाम से पहले घर चली आना, जमाना बहुत खराब है। आखिर यह जमाना क्यूं खराब है? किस तरह से खराब है और इसका जिम्मेदार कौन है? आखिर इन सवालों का जवाब कौन देगा?

इसी तरह के अनेक सवाल मेरे मन में उत्पन्न होते रहते हैं जिनके जवाब न मिलने पर वे वहीं के वहीं रह जाते हैं। हमारे साथ कोई भी, जैसा भी व्यवहार करना चाहता है अपनी मर्जी से करके चला जाता है। हम चाहे सड़कों पर हों या कालेजों में, या दफ्तरों-कारखानों में, स्त्रियों को हमेशा ही दबाया जाता है तथा हम लोगों का शोषण किया जाता है। चाहते हुए भी हम कुछ नहीं कर पाते क्योंकि हमारी आवाज इस पुरुष प्रधान समाज में किसी को सुनायी नहीं पड़ती।

मेरी समझ से इन सबका एक कारण देश का संविधान भी है। कहने के लिए तो ढेरों कानून बने हैं लेकिन लगता है सख्ती जैसी कोई चीज है ही नहीं। कोई भी व्यक्ति इसे

पैसे के बल पर तोड़-मरोड़ सकता है।

कहने के लिए स्त्रियों को कहीं-कहीं आरक्षण का अधिकार प्राप्त है। हो सकता है कुछेक स्त्रियों या लड़कियों को कुछ अधिकार प्राप्त हो जाये या एकाध मामलों में न्याय भी मिल जाये, परन्तु हमारे बुनियादी अधिकारों को बेरहमी से कुचल दिया जाता है।

ऐसा है हमारा समाज! आखिर यह समाज कब बदलेगा? हमें सुरक्षा कब प्राप्त होगी? कब यहां का कानून सबके लिए एक समान होगा और सख्त होगा? मैं समझती हूं यदि हर छोटे-बड़े अपराध के लिए कड़ी से कड़ी सजा दी जाती तो शायद यह समाज बहुत हद तक सुधर जाता।

वन्दना अग्रहरि
डी.ए.वी. डिग्री कालेज, गोरखपुर

बिरसा मुण्डा भी प्रगतिशील थे

'आह्वान' का जनवरी-मार्च 2000 अंक मिला। 'हमारी विरासत' स्तम्भ में आपने बिरसा मुण्डा और उनके समकालीन समाज पर महत्वपूर्ण टिप्पणी प्रकाशित की है। आदिवासियों एवं दलित जातियों के संघर्षों को इतिहास के पृष्ठों में जगह नहीं दी गई। बिरसा का यह मूल्यांकन सर्वथा भिन्न प्रकार का है। इसमें उस वर्ग की स्थिति को अनदेखा नहीं किया गया है जिसमें बिरसा जैसे लोगों ने जन्म लेकर गैर प्रगतिशील आधारों पर अपने लोगों को संगठित करके संघर्ष किया। आदिवासियों के इस संग्राम के दूसरी ओर साम्राज्यवाद के विरुद्ध चला लम्बा युद्ध भी बहुत समय तक धर्म और ईश्वर के बखेड़े से अपने को मुक्त नहीं कर सका। भगतसिंह युग में पहुंचकर ही वह पूरी तरह क्रान्तिकारी चेतना से लैस हो पाया। परन्तु चीजों को उनकी तत्कालीन सामाजिक स्थितियों और विकास क्रम के साथ देखा जाये तो बिरसा भी प्रगतिशील थे, अशफाक और भगत सिंह भी।

सुधीर विद्यार्थी
बीसलपुर, पीलीभीत

सही दिशा में कदम

'आह्वान' के नवीनतम अंक मिले।

इस क्रान्तिकारी पत्रिका के माध्यम से आप पूंजीवाद के विश्वव्यापी खतरे के सार्थक प्रतिकार का स्वर मुखरित कर रहे हैं, जो आश्वस्त करता है। इस दिशा में साहित्य की भी भूमिका को आपने दृष्टिपथ में रखा है। खास तौर पर ब्रेष्ट, पाश, प्रेमचंद सहित अनेक प्रगतिमुखी रचनाकारों तथा विचारकों को भी 'आह्वान' में शामिल कर आपने अपने सही दिशा में कदम रखा है। फिर भी प्रयत्न करें कि कहीं अतिवादिता न हो क्योंकि जमीनी यथार्थ को पहचानने और सांस्कृतिक वातावरण के साथ हमकदम हुए बगैर समग्र परिवर्तन सम्भव नहीं हुआ है। समाजवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के बीच से भी रास्ता तलाशने की कोशिश की जानी चाहिए।

डा. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्राध्यापक, हिन्दी अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

मैं आपके साथ हूं

'आह्वान' पढ़ने के बाद मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि सचमुच यदि आज की युवा पीढ़ी तैयार हो जाये तो कोई भी अप्रत्याशित लगने वाली सफलता पायी जा सकती है। आज के इस पूंजीवादी दौर में आपका प्रयास सराहनीय है जो बिना स्वार्थ उस दिशा में कार्यरत हैं जिसकी सफलता चिरप्रतीक्षित है। मैं उन सभी मित्रों के साथ हूं जो आह्वान से जुड़े हैं।

'आह्वान' पत्रिका में मुझे मेक्सिको और ईरान के छात्रों के आन्दोलन पर सामग्री तथा 'धर्म का धंधा' नामक टिप्पणी ज्यादा पसन्द आयी।

राकेश कुमार श्रीवास्तव
मुजफ्फरपुर (बिहार)

अच्छा अंक

'आह्वान' का जनवरी-मार्च 2000 अंक काफी अच्छा है। खुरदुरे कागज पर पूरी तल्खी के साथ उगे शब्द मस्तिष्क को झनझना देते हैं।

रविशंकर रवि
सम्पादक 'उलुपी', गुवाहाटी

विचारों में क्रान्ति पैदा करने वाला

अनायास ही 'आह्वान' का अक्टूबर-दिसम्बर 1999 का अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पढ़कर विचारों में एक तरह की क्रान्ति सी पैदा हुई। पत्रिका आजकल की भ्रष्ट राजनीति का विकल्प प्रस्तुत करती है। इसके लिए मैं आपकी प्रशंसा करते हुए साधुवाद देता हूं।

सुनील कुमार शर्मा
गोकुलपुरा, आगरा

सान्दर्भिक और विज्ञान सम्मत

'आह्वान' के कुछ अंक मैंने भी पढ़े। पत्रिका विशेष रूप से छात्र समुदाय को संगठित करने का प्रयास कर रही है जो बहुत ही सान्दर्भिक और विज्ञान सम्मत है।

चीनी क्रान्ति के महान नेता माओ त्से-तुङ ने कहा है :

"यह देश तुम्हारा भी है और हमारा भी लेकिन अन्तिम विश्लेषणों में यह देश तुम्हारा है।"

युवा वर्ग को प्रोत्साहित करने में माओ की यह उक्ति अमर रहेगी।

'आह्वान' के जनवरी-मार्च 2000 अंक में 'अग्निदीक्षा' पुस्तक के बारे में सरल और प्रेरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'मेक्सिको के विद्रोही छात्रों को सलाम' और 'ईरान में छात्रों का संघर्ष' से लेकर सभी लेख बहुत उपयोगी हैं। 'आह्वान' का नियमित पाठक बनना चाहता हूं कृपया भेजने की कृपा करें।

'आह्वान' की उन्नति की कामना करता हूं।

भरत शर्मा
न्यू जलपाईगुड़ी (प.बं.)

हमारी पत्रिका

'आह्वान' को पढ़कर लगा कि यह हमारी पत्रिका है। हमारे छात्र जीवन के संघर्ष और क्रान्तिकारी रिश्तों को इसने जीवित कर दिया। पूरी दुनिया को क्रान्तिकारी राह से हटाकर उदारता एवं मिथक के भ्रमजाल में उलझाने के दौर में 'आह्वान' की ऊर्जा एवं ऊष्मा से संचालित जीवनदृष्टि आज की युवा पीढ़ी के लिए अनिवार्य हो जाती है। ऐसी पत्रिका की सख्त जरूरत है।

आज शब्दों के जादूगर
शब्दों के मायाजाल में
तुम्हारी निष्ठा को
तुम्हारी यात्रा के लक्ष्य को
तुम्हारी भूख और गरीबी को
छुपा देना चाह रहे हैं।
थैलीशाहों के ये दलाल हैं।

तुम्हारा कोई आखिरी पड़ाव नहीं
जिन्दगी को रचने की प्रक्रिया
तब तक जारी रहेगी
जब तक मानव की सम्भावनाएं बची रहेंगी
जब तक पूरा नहीं होगा जीवन का यह सपना
संघर्ष का रास्ता ही अपना रास्ता है साथी
इसलिए निर्णय तुम करो।

गणेश चन्द राही, मुम्बई